शिक्षक - श्रेष्ठ समाज के निर्माता
शिक्षक कहलाएँ श्रेष्ठ समाज के निर्माता और रचनाकार
स्वयं अपनाकर श्रेष्ठता, सिखलाते विद्यार्थियों को सद्व्यवहार
अपने श्रेष्ठ आचरण से रखते वे श्रेष्ठ समाज की नींव
बनाकर उनके जीवन को उज्जवल, वह जगाएं आशा के दीप

याद आए वो प्राचीनकाल की गुरु-शिष्य परंपरा
गुरुकुल में अनुशासित जीवन, फिर करना जीवन निर्वाह
संयम-नियम का होता था मर्यादा पूर्वक पालन
पवित्रता, कर्तव्यनिष्ठा, और सत्यता थे जीवन का आभूषण

शनैः-शनैः विकारों ने किया हम आत्माओं में प्रवेश
भूले हम, आत्मा, परमात्मा और अपना निज स्वदेश
देह अभिमान वश विकारी हुई आत्मा और उसकी मनोदशा
ईश्वर को सर्व-व्यापी कहने से ही हुई यह दुर्दशा

'यत नारी पूज्यन्ती ...' श्लोक का होने लगा

उपवन